एम.एच.डी.-1

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

03225

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2012

एम.एच.डी.-1 : हिन्दी काव्य-1 (आदि काव्य, भक्ति काव्य एवं रीति काव्य)

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : *कुल **चार** प्रश्नों के उत्तर देने हैं। प्रथम प्रश्न **अनिवार्य** है। शेष में से **किन्हीं तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

---

1. निम्नलिखित में से ***किन्हीं दो*** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। **10x2=20**

(क) समाचार कहि जनक सुनाए। जेहि कारन महीप सब आए।।
सुनत बचन फिरि अनत निहारे। देखे चापखंड महि डारे।।
अति रिस बोले बचन कठोरा। कहु जड़ जनक धनुष कै तोरा।।
बेगि देखाउ मूढ़ न त आजू। उलटउँ महि जहँ लहि तव राजू।।
अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं। कुटिल भूप हरषे मन माहीं।।
सुर मुनि नाग नगर नर नारी। सोचहिं सकल त्रास उर भारी।।
मन पछिताति सीय महतारी। बिधि अब सँवरी बात बिगारी।।
भृगुपति कर सुभाउ सुनि सीता। अरध निमेष कलप सम बीता।।

(ख) माई साँवरे रंग राची।

साज सिंगार बाँध पग घूंघर, लोकलाज तज नाची।

गयाँ कुमत लयाँ साधाँ सँगत श्याम प्रीत जग साँची।

गायाँ गायाँ हरि गुण निसदिन, काल ब्याल री बाँची।

स्याम विणा जग खाराँ लागाँ, जगरी बातां काँची।

मीराँ सिरि गिरधर नट नागर भगति रसीली जाँची।।

(ग) अति सूधो सनेह को मारग है जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।

तहाँ साँचे चलें तजि आपनपौ झझकैं कपटी जे निसाँक नहीं।

घनआंनद प्यारे सुजान सुनौ यहाँ एक तें दूसरी आँक नहीं।

तुम कौन धौं पाटी पढ़े हौ कहौ मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं।।

(घ) फागु के भीरे अभीरन तें गहि गोबिंद लै गई भीतर गोरी।

भाई करी मन की पद्माकर ऊपर नाई अबीर की झोरी।

छीन पितंबर कंमर तें सु बिदा दई मीड़ि कपोलन रोरी।

नैन नचाइ कह्यो मुसकाइ भला फिरि आइयौ खेलन होरी।।

2. गीतिकाव्य के रूप में 'विद्यापति पदावली' की विशेषताएँ बताइए । 10

3. कबीर के काव्य पर सिद्धों और नाथों के प्रभाव की विवेचना कीजिए । 10

4. प्रेमाव्यानक काव्य परम्परा की विशेषताएँ क्या है? विचार कीजिए। 10

5. 'भ्रमरगीत' में सूरदास ने सगुण-निर्गुण द्वंद्व को किस प्रकार रूपायित किया है ? सोदाहरण उत्तर दीजिए । 10

6. बिहारी की काव्यगत विशेषताओं का विवेचन कीजिए । 10

7. शृंगार के कवि के रूप में पद्माकर का मूल्यांकन कीजिए । 10